केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

(आज समाचार सेवा)

झांसी, २८ फरवरी। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा0 एच.एन. पाण्डेय, प्राध्यापक (सेवानिवृत्त) एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान, नार्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, षिलान्ग, मेघालय थे। उन्होने इस अवसर पर एक व्याख्यान भी दिया जिसका शीर्षक 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत दृष्टिकोण' था। इस अवसर पर विषिष्ठ अतिथि के रूप में डा. अमरेष चन्द्रा, निदेषक, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी विषेष रूप से उपस्थित रहे। सर्वप्रथम डा. बद्रे आलम, प्रधान वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथ एवं विषिष्ट अतिथि का स्वागत करते उनका संक्षिप्त परिचय दिया।

अतिथि का स्वागत करते हुए। छाया-आज

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए डा. ए. अरूणाचलम, निदेषक, केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी ने बताया कि सर सी.वी. रमन जिनकी याद में हम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाते है। उन्होने देश के किसानों को लाभान्वित करने वाले ट्रान्सलेशनल अनुसंधान के महत्व के बारे में बताया।

मुख्य अतिथि द्वारा अपने व्याख्यान में बताया गया कि देश में विज्ञान आधारित विकास के लिए तकनीकी हस्तक्षेप और नवाचारों की आवश्यकता है। डा. पाण्डेय ने विषेष रूप से बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए भूमि, पानी, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन और कृषि स्थिरता की समस्याओं को हल करने के लिए केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी की भागीदारी की सराहना की। उन्होने भारत में विज्ञान क्षेत्रों के लिए छात्रों और युवा शोधकर्ताओं को प्रेरित करने की आवष्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर बोलते हुए डा. अमरेष चन्द्रा, निदेषक, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी ने देष में घास के मैदान पारिस्थितिकी तंत्र का मूल्यांकन किया और समग्र पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन में विषिष्ट हस्तक्षेप का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी के वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी, शोध एवं विकास संस्थानों और कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, परियोजना कर्मचारियों और छात्रों ने भाग लिया।

संचालन डा. बद्रे आलम, प्रधान वैज्ञानिक एवं धन्यवाद डा. सी. के. बाजपेयी ने व्यक्त किया।

भिवानी के देवसर में बन रहे अखंड भारत माता मंदिर में आयोजित 7 दिवसीय मां बगलामुखी यज्ञ में पूर्णाहुति डालने के उपरांत महंत माई जी महाराज से मंदिर के बारे में विस्तार से जानकारी ली। साथ ही मंदिर निर्माण हेतु 21 लाख का योगदान देने की घोषणा भी की। —— मनोहर लाल खट्टर, मुख्यमंत्री, हरियाणा

केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

झांसी (एसएनबी)। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. एचएन पांडेय, प्राध्यापक (सेवानिवृत्त) एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान, नार्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय थे। उन्होंने इस अवसर पर एक व्याख्यान भी दिया जिसका शीर्षक 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत दृष्टिकोण' था। इस अवसर पर विषिष्ठ अतिथि के रूप में डा. अमरेश चन्द्रा, निदेषक, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान विशेष रूप से उपस्थित रहे। सर्वप्रथम डा. बद्रे आलम, प्रधान वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथ एवं विशिष्ठ अतिथि का स्वागत करते उनका संक्षिप्त परिचय दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डा. ए अरूणाचलम, निदेषक, केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान ने बताया कि सर सीवी रमन जिनकी याद में हम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाते है। उन्होंने देश के किसानों को लाभान्वित करने वाले ट्रांसलेशनल अनुसंधान के महत्व के बारे में बताया। मुख्य अतिथि द्वारा अपने व्याख्यान में बताया गया कि देश में विज्ञान आधारित विकास के लिए तकनीकी हस्तक्षेप और नवाचारों की आवष्यकता है। डा. पाण्डेय ने विषेष रूप से बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए भूमि, पानी, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन और कृषि स्थिरता की समस्याओं को हल करने के लिए केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान की भागीदारी की सराहना की। इस अवसर पर बोलते हुए डा. अमरेश चन्द्रा, निदेशक, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान ने देश में घास के मैदान पारिस्थितिकी तंत्र का मूल्यांकन किया और समग्र पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन में विशिष्ठ हस्तक्षेप का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी, शोध एवं विकास संस्थानों और कृषि विष्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, परियोजना कर्मचारियों और छात्रों ने भाग लिया। संचालन डा. बद्रे आलम, प्रधान वैज्ञानिक एवं धन्यवाद डा. सी. के. बाजपेयी ने व्यक्त किया।